मूल्यांकन : अर्थ एवं परिभाषा
(Evaluation : Meaning and Definition)

अर्थ (Meaning)—मापन प्रक्रिया के अन्तर्गत जहाँ कि वस्तु को आँकिक स्वरूप (Quantitative form) प्रदान किया जाता है, वहीं मूल्यांकन में इसके विपरीत उस वस्तु का मूल्य (Value or Qualitative form) निर्धारित किया जाता है अर्थात्, मूल्यांकन में इस सत्य का निर्माण किया जाता है कि कौन-सी चीज अच्छी है और कौन सी चीज बुरी? (What is good and what is bad ?)। अतः जब हम किसी व्यक्ति अथवा वस्तु का उसके गुण-दोषों के सन्दर्भ में अवलोकन करते हैं तो वहाँ 'मूल्यांकन' निहित होता है। शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन को एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस तकनीकी प्रक्रिया के अन्तर्गत न केवल छात्रों की विषय विशेष सम्बन्धी योग्यता की ही जानकारी प्राप्त की जाती है बल्कि यह भी जानने का प्रयास किया जाता है कि उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास किस सीमा तक हुआ है। साथ ही, शिक्षण, पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधियों आदि की सफलता के बारे में जानकारी प्राप्त करने में भी मूल्यांकन प्रक्रिया का सहारा लिया जाता है। स्पष्ट है कि मूल्यांकन प्रक्रिया एकांगी (One dimensional) न होकर विभिन्न कार्यों की श्रृंखला (Series of Activities) है जिसके अन्तर्गत मात्र केवल एक ही कार्य (Act) निहित नहीं होता वरन् अनेक सोपान (Steps) सम्मिलित रहते हैं। संक्षेप में, मूल्यांकन एक निर्णयात्मक एवं व्यापक प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत विषय-वस्तु की उपयोगिता के विषय में विवेकपूर्ण निर्णय लिया जाता है।

कुछ परिभाषाएँ (Few Definitions)

(1) **रेमर्स एवं गेज** के अनुसार, "मूल्यांकन के अन्दर व्यक्ति या समाज अथवा दोनों की दृष्टि से जो उत्तम है अथवा वाँछनीय है, उसको मानकर चला जाता है।"

"Evaluation assumes a purpose or an idea of what is 'good' or 'desirable' from the standpoint of the individual or society or both."

—H.H. Remmers & M.L. Gage

(2) **डांडेकर** के अनुसार, "मूल्यांकन हमें यह बताता है कि बालक ने किस सीमा तक किन उद्देश्यों को प्राप्त किया है।"

"Evaluation may be defined as a systematic process of determining the extent to which educational objectives are achieved by the pupils."

—Dandekar

Scanned by TapScanner

whatever one has experienced or is experiencing.

(7) **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT)** द्वारा दी गई परिभाषा के अनुसार, "मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त किया गये हैं, कक्षा में दिये गये अधिगम अनुभव कहाँ तक प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं और कहाँ तक शिक्षा के उद्देश्य पूर्ण किये गये हैं।"

"Evaluation is the process of determining the extent to which an objective is being attained, the effectivences of the learning experiences provided in the classroom and how well the goals of education have been accomplished."

—NCERT

मूल्यांकन की मान्यताएँ (Its Assumptions)

मूल्यांकन प्रक्रिया की कुछ प्रमुख मान्यताएँ इस प्रकार हैं–

(1) शिक्षा का एक मात्र कार्य बालक के व्यवहार में अपेक्षित व्यवहारीय परिवर्तन लाना होता है। इस दृष्टि से मूल्यांकन का ध्येय हमें स्पष्ट होना चाहिये।

(2) मूल्यांकन उद्देश्यों के निर्धारण के पश्चात् उन्हें प्राप्त करने के लिए उपयुक्त मूल्यांकन उपकरण (Tool) का चयन करना चाहिये।

(3) एक ही उपकरण के माध्यम से किसी भी व्यक्ति का पूर्ण मूल्यांकन सम्भव नहीं है। इस प्रकार, मूल्यांकन प्रक्रिया वह सीमा निर्धारित करती है जहाँ तक शैक्षिक उद्देश्य प्राप्त किये जा सकते हैं।

Scanned by TapScanner

(4) मानव व्यवहार अत्यन्त जटिल है। अतः इसके मूल्यांकन हेतु व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों (Dimensions) का मापन करना अत्यन्त आवश्यक है।

(5) मूल्यांकनकर्ता को मूल्यांकन विधा की प्रत्येक प्रविधि एवं विभिन्न उपकरणों का भली-भाँति ज्ञान होना चाहिये।

(6) मूल्यांकन अपने आप में एक अन्त (end) नहीं है वरन् दूसरी चीजों की प्राप्ति में एक साधन (means) के रूप में प्रयुक्त किया जाना चाहिये।

(7) मूल्यांकन अत्यन्त सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिये। साथ ही, यथा सम्भव दोषों (errors) के जाल से बचना चाहिये।

(8) मापन एवं मूल्यांकन दोनों ही छात्र के सीखने को प्रभावित करते हैं।

(9) मूल्यांकन का दायित्व विद्यालय, व्यक्ति एव अभिभावक सभी पर होता है।

(10) मूल्यांकन के सिद्धान्तों एवं नैतिक मूल्यों का यथा–सम्भव पालन करना चाहिये।

मूल्यांकन के उद्देश्य (Purpose of Evaluation)

शिक्षा प्रक्रिया में मूल्यांकन के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैं–

(1) मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य छात्रों का वर्गीकरण करना है।

(2) मूल्यांकन के द्वारा छात्रों को उचित शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्ग निर्देशन प्रदान किया जाता है।

(3) मूल्यांकन के द्वारा पाठ्यक्रम में उचित संशोधन किया जा सकता है।

(4) मूल्यांकन का प्रयोग छात्रों में अधिगम (Learning) की मात्रा ज्ञात करने में किया जाता है।

(5) मूल्यांकन के द्वारा शिक्षकों की कुशलता एवं सफलता का मापन किया जाता है।

(6) मूल्यांकन के द्वारा छात्रों की दुर्बलताओं एवं योग्यताओं की जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

(7) मूल्यांकन शिक्षण विधियों की उपयुक्तता की जाँच करता है।

(8) मूल्यांकन का प्रयोग अनुदेशन (Instruction) की प्रभावशीलता ज्ञात करने एवं उसके अनुरूप अपनी क्रियाओं (Activities) के नियोजन (Planning) करने में किया जाता है।

(9) मूल्यांकन का एक उद्देश्य छात्रों की समस्याएँ समझने एवं उनकी प्रगति के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करना भी है।

(10) मूल्यांकन का उद्देश्य इस बात की जानकारी प्रदान करना है कि छात्रों की विभिन्न व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति किस प्रकार की जा सकती है।

मापन एवं मूल्यांकन में अन्तर
(Difference between Measurement and Evaluation)

प्रायः **'मूल्यांकन'** को **'मापन'** से भ्रमित (Confused) किया जाता है, जबकि ये दोनों एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न होते हैं। वस्तुतः मापन किसी वस्तु का अंकात्मक (Quantitative) रूप है जबकि मूल्यांकन मापन के साथ-साथ उस वस्तु का परिमाणात्मक (Qualitative) चित्र भी प्रस्तुत करता है। संक्षेप में, मापन अंकात्मक है तथा मूल्यांकन परिणामात्मक, अथवा, यूँ कहें कि मापन से हमें यह पता चलता है कि कोई वस्तु कितनी है (How much)? जबकि

Scanned by TapScanner

मूल्यांकन हमें बताता है कि कोई वस्तु कितनी अच्छी है (How good)? इसके अतिरिक्त मूल्यांकन में इस बात पर भी अधिक ध्यान दिया जाता है कि विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति किस सीमा तक हुई है जबकि मापन में हमारा तात्पर्य केवल इसी बात से रहता है कि हमने कितने विशिष्ट उद्देश्य प्राप्त करने की कोशिश की है। बिना मूल्यांकन के मापन अपूर्ण है। अतः कहा जा सकता है कि—"Measurement refers to observations that can be expressed quantitatively and answers the question, 'How much'? While Evaluation goes beyond the statement of how much to concern itself with the question, 'What value'?"

राइटस्टोन (Wrighstone) ने मापन एवं मूल्यांकन में अन्तर स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "मापन में विषय-वस्तु के केवल एक ही पहलू पर ध्यान दिया जाता है जबकि मूल्यांकन सम्पूर्ण वातावरण के सन्दर्भ में स्थिति का ज्ञान कराता है, उदाहरणार्थ—किसी बालक की गणित में परीक्षा लेने से मात्र हम उसकी गणितीय योग्यता के बारे में ही जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं। उसकी रुचियों, क्षमताओं एवं योग्यताओं के बारे में गणित की यह परीक्षा कोई संकेत नहीं करतीं।"

"The emphasis in Measurement is upon single aspect of subject-matter achievement or specific skills and abilities but ... the emphasis in Evaluation is upon broad personality changes and major objectives of an educational programme. These include not only subject-matter achievement but also attitudes, interests, ideals, ways of thinking, work-habits and personal and social adaptability *e.g.*, by testing a child in Mathematics we may measure his mathematical ability and nothing else. We may not have any idea about the interests, abilities etc., of the child in Maths by administering this single test.

In brief, we can say that Measurement is quantitative while Evaluation is qualitative."

मापन एवं मूल्यांकन में जो अन्तर हैं उन्हें नीचे तुलना द्वारा और स्पष्ट किया गया है—

मापन (Measurement)	मूल्यांकन (Evaluation)
(1) मापन का क्षेत्र सीमित होता है। मापन में व्यक्तित्व के कुछ ही आयामों की परीक्षा सम्भव होती है।	(1) मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक होता है। इसमें छात्र के सम्पूर्ण व्यकितत्व की परीक्षा की जाती है।
(2) मापन के द्वारा तुलनात्मक अध्ययन सम्भव नहीं।	(2) मूल्यांकन के द्वारा तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
(3) मापन एक साधन (Means) है, अपने आप में साध्य (End) नहीं।	(3) मूल्यांकन अपने-आप में एक साध्य है।
(4) मापन किसी छात्र के सम्बन्ध में स्पष्ट धारणा व्यक्त नहीं करता।	(4) मूल्यांकन के आधार पर किसी छात्र के विषय में स्पष्ट धारणा बनाई जा सकती है।
(5) मापन का कार्य साक्ष्यों (Evidences) का एकत्रीकरण (Collection) करना होता है।	(5) मूल्यांकन का कार्य साक्ष्यों से निष्कर्ष (Appraisement of Evidences) निकालना है।

Scanned by TapScanner

मापन (Measurement)	मूल्यांकन (Evaluation)
(6) मापन में अधिक श्रम एवं समय की आवश्यकता नहीं होती।	(6) मूल्यांकन में अधिक श्रम एवं समय की आवश्यकता पड़ती है।
(7) मापन पाठ्य-वस्तु (Content) केन्द्रित होता है।	(7) मूल्यांकन उद्देश्य (Objective) केन्द्रित होता है।
(8) मापन उन निरीक्षणों की ओर संकेत करता है जो अंकात्मक रूप में प्रदर्शित किये जाते हैं।	(8) मूल्यांकन के अन्तर्गत अंकात्मक एवं गुणात्मक दोनों ही प्रकार के निरीक्षणों को स्थान दिया जाता है।
(9) मापन शिक्षा का एक आवश्यक अंग नहीं भी हो सकता।	(9) मूल्यांकन शिक्षा का एक समग्र अंग है।
(10) मापन में एक स्थिति का ज्ञान होता है। यह सम्पूर्ण वातावरण से पृथक रहता है।	(10) मूल्यांकन सम्पूर्ण वातावरण के सन्दर्भ में स्थिति का ज्ञान कराता है।
(11) मापन में वस्तु कितनी है? (How Much?) का उत्तर दिया जाता है। सुनन्दा ने विज्ञान में 56 अंक प्राप्त किये हैं, यह मापन है।	(11) मूल्यांकन में वस्तु का क्या मूल्य है? (What Value ?) का उत्तर दिया जाता है। सुनन्दा ने विज्ञान में 56% अंक लेकर कक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है, यह मूल्यांकन है।
(12) मापन किसी भी समय किया जा सकता है।	(12) मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
(13) मापन के आधार पर भविष्यवाणी सार्थकता के साथ नहीं की जा सकती।	(13) मूल्यांकन में भविष्यवाणी सार्थकता के साथ की जा सकती है।

Scanned by TapScanner